युवा जीवन

दिसंबर 2022

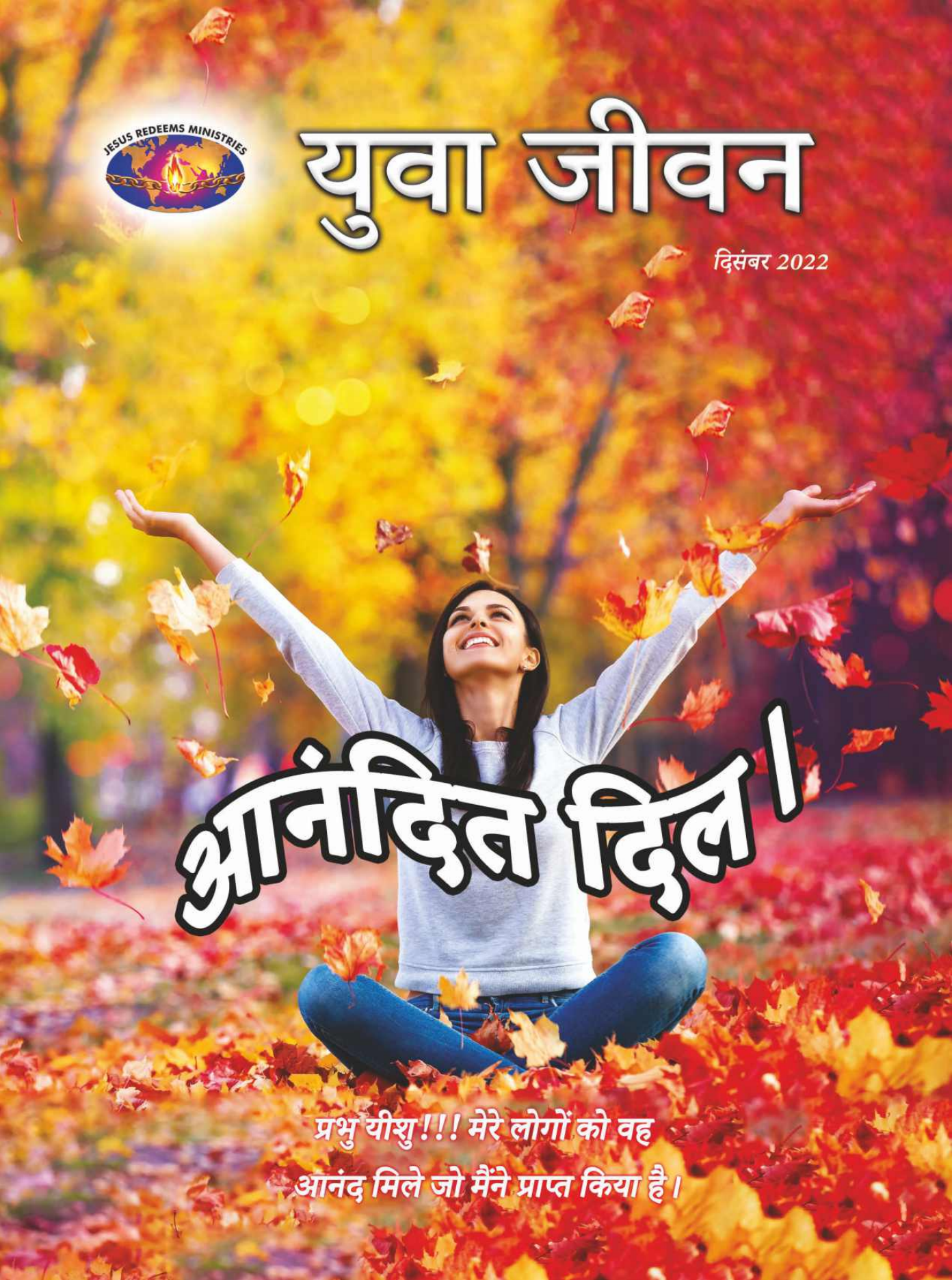

आनंदित दिल।

प्रभु यीशु!!! मेरे लोगों को वह
आनंद मिले जो मैंने प्राप्त किया है।

प्रस्तावना।

प्यारे युवा दिलों को मैरी क्रिसमस की बधाई !!! दिसंबर आने पर और नए साल के आगमन के बारे में भी सभी खुश हैं। छोटे बच्चे नए कपड़े पाने की चाह रखते हैं. और कई लोगों की कई इच्छाएं और सपने होते हैं। लेकिन जरूरतमंद इस क्रिसमस पर कुछ अच्छे भाग्य की उम्मीद कर रहे होंगे।

हममें से बहुत से लोग क्रिसमस के दौरान गरीबों और ज़रूरतमंदों के बारे में सोचते हैं! हम अच्छा करते हैं। कई बार हम अच्छा करते हुए वहीं रुक जाते हैं। आइए हम उन्हें साहसपूर्वक यीशु का नाम बताएं, जो सच्चे सुख और भलाई का कारण है।

इसका कारण यह है कि चूंकि बहुत से लोग यीशु के बारे में अनजान हैं, इसलिए हम सोचते हैं कि यदि हम उन्हें यीशु के बारे में बताएंगे तो वे आहत हो जाएंगे। इसलिए हम सतही तरीके से "यीशु आपसे प्रेम करते हैं" कहते हैं, ताकि उनकी भावनाओं को ठेस न पहुंचे ।

पुरस्कार, भोजन पैकेज और कुछ एहसान जो हम करते हैं, उन्हें केवल कुछ घंटों या मिनटों के लिए आराम, प्यार और खुशी दे सकते हैं। लेकिन केवल उद्धारकर्ता यीशु उन्हें शाश्वत शांति, स्वतंत्रता, प्रेम और आराम दे सकते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है।

आप, जो उन्हें कुछ मिनटों के लिए खुश करते हैं, उन्हें और अधिक यीशु को दें जो उनके जीवन में अनंत आनंद और खुशी देते हैं, कि वे तृप्त हों।

क्रिसमस के दिनों के बाद भी मसीह के प्रेम को उनके हृदयों में गहराई से बोने दें।

यदि हम यीशु के प्रेम को उदारतापूर्वक बाँटना चाहते हैं, तो हमें इसके लिए कुछ घंटे अलग रखने होंगे। उपहार देना आसान है। सबसे बड़ी अच्छाई जो आप कर सकते हैं वह है उनके पास बैठना और उनसे पूछताछ करना और उनसे विश्वास के शब्द बोलना।

इन क्रिसमस के दिनों में आइए हम यीशु के विषय बहुतायत और उदारता से बताने की कोशिश करें ताकि गरीब और ज़रूरतमंद भी वो आनंद प्राप्त कर सकें जो यीशु देते हैं।

मैरी क्रिसमस, हम उन सभी युवा आत्माओं को शुभकामनाएं देते हैं जो यीशु के लिए कुछ भी करने के लिए उत्सुक हैं!

मसीह के मिशन में

अविनाश।

उध्दार की जागृति

यह बहुत खुशी की बात है कि भारतीय राष्ट्र के लोगों को बचाने के उद्देश्य से आज परमेश्वर के कई सेवक और सेवकाइयां काम कर रही हैं। पूरे भारत में मुक्ति का संदेश बड़े जोश के साथ प्रचार किया जा रहा है कि जो लोग यीशु को नहीं जानते वे किसी तरह उन्हें जान लें और बच जाएं। जब हमारे राष्ट्र पर उध्दार की बेदारी उंडेली जाएगी, लोग अपने पापों का एहसास करेंगे और पश्चाताप करेंगे, बपतिस्मा लेंगे और चर्च में शामिल होंगे।

प्रेरितों के दिनों में, जागृति की आग जो चेलों पर डाली गई थी, यरूशलेम के आसपास के लोगों में फैलने लगी। वे जिन्होंने पतरस के शब्दों को सुना जब उसने प्रचार किया "...उनके हृदय छिद गए और वे शेष प्रेरितों और पतरस से कहने लगे, "हे भाइयो, हम क्या करें?" (प्रेरितों के काम 2:37) ठीक उसी समय जब पतरस ने उन्हें मन फिराने और यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा के लिए कहा, तो लगभग 3000 लोगों को बपतिस्मा दिया गया और चर्च में जोड़ा गया। कुछ सैकड़ों की एक मण्डली हजारों में बदल गई। इसके अलावा, "प्रभु ने उन लोगों को जो प्रतिदिन उध्दार पा रहे थे चर्च में जोड़ा " (प्रेरितों के काम 2:47), और कलीसियाएं बढ़ीं और गुणा होती गई।

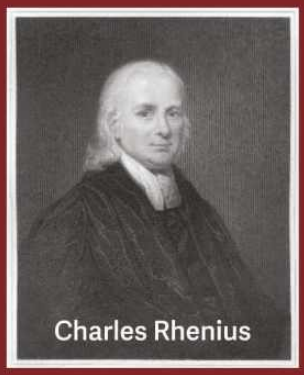
Charles Rhenius

हमारे तमिलनाडु में भी, 1800 के दशक में, उध्दार की जागृति उंडेली गयी थी और कई लोगों को चर्चों में जोड़ा गया था। 1806 से चार्ल्स रेनियस (CMS मिशनरी) के माध्यम से एक महान बेदारी की लहर चली, जिसने तमिलनाडु के दक्षिणी जिलों में सेवा की। उन्होंने 1820 के दशक में तिरुनेलवेली के कई गांवों में छोटे चर्चों की स्थापना की। उन्होंने लगभग 18 वर्षों में 400 चर्च और 200 स्कूल बनवाए। उन्हें पौलुस के बाद उनके संस्थापक कर्मचारियों, द्वारा सबसे महान मिशनरी के रूप में सम्मानित किया गया, डॉ.वोल्फ और सेंट जो एक सप्ताह के लिए रेनियस के साथ रहे। उसके द्वारा बहुत से लोगों का उद्धार हुआ और वे चर्च में लाए गए। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि जब भूमि पर उद्धार की जागृति उंडेली जाएगी तो शहर और गांव हिल जाएंगे और चर्च बढ़ेंगे और गुणा होंगे।

मेरे प्यारे युवाओं! उठो और उद्धार के संदेश की घोषणा करने के लिए जाओ, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो, और तु और तेरा घराना उद्धार पाएगा" (प्रेरितों के काम 16:31)। आप में जागृति की आग उन लोगों को भी जकड़ लेगी जिनसे आप मिलेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बहुत से लोग बचाए जाएँगे और आपके द्वारा कलीसिया में लाए जाएँगे।

वह खोजता हुआ आया....

श्रीलंका में एक भक्त जोड़े को, एस्तेर मयू नाम की एक बेटी हुई, एक ऐसे परिवार में हुआ था जो परमेश्वर को नहीं जानता था और हर किसी के द्वारा उपेक्षित था। वह खुद हमारे साथ साझा करती हैं कि कैसे वह परमेश्वर की ओर आकर्षित हुईं।

बहन एस्तेर

हाय एस्तेर...तुम कैसी हो? मैं अच्छी हूँ अक्का;

आप कैसे हैं...? मैं भी ठीक हूँ।

खैर... हम आपकी गवाही सुनने को तैयार हैं। चलो!! चलते हैं।

ठीक है...मुझे अपने परिवार के बारे में बताओ?

मेरे माता-पिता श्रीलंका से हैं और वे 1990 में श्रीलंका से शरणार्थी के रूप में भारत आए और चिदंबरम नामक शहर में शरण ली। मेरे माता-पिता एक पारंपरिक हिंदू परिवार से हैं, मैं श्री मनोहरन और श्रीमती विग्नेश्वरी की सबसे बड़ी बेटी के रूप में मेरा जन्म हुआ और मेरी एक छोटी बहन और एक छोटा भाई है। मेरे पिता का 5 साल पहले निधन हो गया। मेरी मां होम नर्स के रूप में काम कर रही हैं।

ठीक है....अपने बचपन के बारे में बताओ?

मेरा जन्म कुड्डालोर जिले के चिदंबरम में हुआ था। मेरा जन्म एक चौथाई किलो (1 1/4 किलो) वजन के साथ हुआ था और मुझे 3 महीने तक वेंटिलेटर पर रखा गया था। डॉक्टर ने कहा कि मैं मर जाऊंगी। मेरे रिश्तेदार रोज मेरे पास आते थे यह देखने के लिए कि मैं जिंदा हूं या मर गई। परन्तु मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर ने मुझे जीवन दिया क्योंकि उसने मुझे उस समय पूर्वनियत किया था।

ठीक है... परमेश्वर ने तुम्हें जो मरने वाली थी जीवन दिया.... क्या उसके बाद तुम्हारा जीवन सुचारू रूप से चला?

जब मैं 2 साल की थी तब मेरी मां विदेश चली गईं और मुझे बचपन में मां की गर्मजोशी और प्यार नहीं मिला। मेरे पिता ने मुझे पाला। 2 साल बाद मेरी मां भारत आ गईं। जब मैं 10 साल की थी तब मेरी मां फिर से विदेश चली गईं। मैं अपनी स्कूली शिक्षा कर रही थी और अपने छोटे भाई का भी पालन-पोषण कर रही थी। चूंकि मेरे पिता एक फोटोग्राफर थे, इसलिए वे अक्सर अपने पेशे के सिलसिले में बाहर जाते थे।

Sis. Esther with her family

अच्छा... क्या उसके बाद तुम्हारी माँ विदेश से भारत आ गई?

हां... हम 2006 में एक परिवार के तौर पर श्रीलंका गए थे। हमने यह सोचकर चल दिए कि हम कभी भारत वापस नहीं आएंगे। लेकिन एक अप्रत्याशित समय पर श्रीलंका में फिर से युद्ध छिड़ गया। किसी तरह हम बचकर भारत पहुंचे। अब हम मदुरै में एक शरणार्थी शिविर में रह रहे हैं।

अच्छा.. तुम श्रीलंका से लौट आए... अपनी पढ़ाई के बारे में बताओ?

चूंकि हम श्रीलंका से भाग गए थे और हमारे पास अध्ययन का कोई ज़रिया नहीं था, इसलिए हम पढ़ने की सुविधाओं से वंचित थे। उस समय मैं एक क्रिश्चियन स्कूल में 9वीं कक्षा में थी। 10वीं कक्षा में झगड़ों और घर की समस्याओं के कारण मैं ठीक से पढ़ाई नहीं कर पाई। क्रिश्चियन स्कूल के कारण मैं यीशु के नाम को जानती थी। इसलिए मैंने यीशु के साथ-साथ अन्य देवताओं से भी प्रार्थना की कि मेरी पारिवारिक समस्या बदल जाए और मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाऊं। मेरी प्रार्थना कुबूल हुई और वही हुआ। लेकिन जब मुझे संदेह हुआ कि किस परमेश्वर ने ऐसा किया है, तो मैंने दूसरे देवताओं से दूसरे कारण से प्रार्थना की। ऐसा नहीं हुआ और मैंने यीशु से वही प्रार्थना की। वह बात हो गई। इसलिए मैंने यीशु से यह कहते हुए प्रार्थना की, "मैं ऐसी स्थिति में हूँ जहाँ मैं अपने परिवार की समस्याओं के कारण पढ़ नहीं सकती। कृपया मेरी 10वीं की बोर्ड परीक्षा पास करने में मेरी मदद करें।" उसने मुझे प्रार्थना के अनुसार सफलता दी।

बहुत अच्छा हुआ कि आप अपनी परीक्षा में सफल हुए...!! क्या आपने पढ़ना जारी रखा? आपने यीशु को कब स्वीकार किया?

मेरे घर में पढ़ने की कोई सुविधा नहीं होने के कारण मेरी माँ की बड़ी बहन का बेटा मुझे इरोड ले गया और मैंने

उनके घर से कक्षा 11 में कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई शुरू की।

बहन एस्तेर अपने परिवार के साथ. उन 2 सालों तक मेरे भाई (माँ की बड़ी बहन का बेटा) ने मुझे पढ़ाया। इतना ही नहीं, बल्कि वे ही थे जो मुझे मुक्ति की ओर ले गए। उस समय यीशु ने मुझसे कहा, "तुमने मुझसे 10वीं पास करने की प्रार्थना की थी; मैंने तुम्हें सफलता दी। फिर तुम उच्च शिक्षा पढ़ना चाहती थी, मैंने वह भी दे दी। अब तुम मुझे चाहती हो या इस दुनिया के इंसानों को?" उसने पूछा। मैंने ठीक उसी समय यह कहते हुए यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया, कि "आप ही थे जिन्होंने मुझे प्यार और खुशी दी और केवल आप ही मुझे चाहिए।" यह कहते हुए कि, "मैं अपने मित्र के घर जा रही हूँ," मैं अपनी पोशाक में छिपाई हुई बाइबिल ले जाती और बिना किसी के जाने चर्च चली जाती। मैं गुप्त रूप से प्रार्थना करती। मैंने अपने घर के लोगों की जानकारी के बिना बपतिस्मा लिया। परमेश्वर ने मेरा नाम बदलकर एस्तेर मयू रख दिया। उसके बाद मैंने अपने दोस्तों को यीशु के बारे में बताना शुरू किया और कक्षा 12वीं की सार्वजनिक परीक्षा के लिए हमने कुछ दोस्तों को बुलाया और प्रार्थना सभा रखी। 23 लोग उपस्थित हुए और सभी ने यीशु को स्वीकार किया। यह मेरी पहली सेवकाई थी, और तभी से मैंने यीशु की सेवा करने का निश्चय किया।

ठीक... आपने यीशु को स्वीकार कर लिया... क्या आपके परिवार ने आपको स्वीकार किया?

नहीं... चूंकि मेरे पिता एक उत्साही भक्त थे, वे 18 साल से बड़ी भक्ति के साथ सबरीमाला जा रहे थे। जब मैं अपनी पढ़ाई पूरी करके घर आई, तो उन्होंने मुझे पीटा और डाँटा जब उन्हें पता चला कि मैंने बपतिस्मा ले लिया है । उन्होंने पूजाएं की और मुझे यीशु को अस्वीकार करने के लिए कहा। कोई मुझसे बात नहीं करते थे, मुझे अलग कर दिया गया। पर मैंने यीशु को नहीं छोड़ा, चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न हों ।

सुपर... आपने किसी भी परिस्थिति में यीशु को नहीं छोड़ा... खैर, आपके जीवन में क्या बदलाव आया है?

मैं अपनी पढ़ाई खत्म करना चाहती थी और कॉलेज जाना चाहती थी, मेरे माता-पिता ने कहा कि पढ़ाई का कोई ज़रिया नहीं है। विदेश से किसी ने 7000 रुपये भेजे और मुझे 3 महीने के लिए डीटीपी पाठ्यक्रम का अध्ययन करने में मदद की। मैंने उन्हें आज तक कभी नहीं देखा। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, परमेश्वर ने मुझे एक सिस्टम कैमरा खरीदने की आशीष दी और मैंने और मेरे पिता ने फोटोग्राफर के रूप में एक साथ काम करना शुरू कर दिया। पिताजी भारी शराबी थे। 2017 मेरे पिता का में निधन हो गया। उनकी मृत्यु ने मुझे बहुत व्यथित किया। पर यीशु ने मुझे साहस और शक्ति दी। जब मैं अपने पिता के बिना परेशान थी, तो यीशु ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझसे यह कहते हुए बात की, "मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा और न ही तुम्हें त्यागूंगा।"

आपके पिता की मृत्यु के लिए अफसोस है...! क्या आपने अपना व्यवसाय जारी रखा?

मैंने उस व्यवसाय को अकेले ही करना शुरू कर दिया और हर समय परमेश्वर मेरे साथ थे और मेरा मार्गदर्शन किया। मुझमें परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा और प्यास थी। 10 साल बाद मैंने फिर से चर्च जाना शुरू किया। मैंने वचनों को पढ़ना शुरू किया। यीशु ने मेरा भय और लज्जा दूर कर दी। मैंने मदुरै में सिनर्जिया सभाओं में जाना शुरू किया। अब उन्होंने मुझे सिनर्जिया में एक टीम दी है और मुझे इसके प्रमुख के रूप में रखा है। मैं ग्राम सेवकाई कर रही हूं और प्रभु मुझे 1000 से अधिक युवाओं के बीच प्रार्थना करने का अनुग्रह दे रहे हैं। उसने मुझे एक मुक्ति ना पाए हुए परिवार से चुना और आज मुझे सभी के लिए एक आशीष के रूप में रखा है। उन्होंने मुझे आज सर्वश्रेष्ठ महिला फोटोग्राफर के रूप में चुना है जो नहीं जानती थी कि फोटोग्राफी क्या होती है। मैं व्यवसाय कर रही हूँ और अंशकालिक सेवकाई भी कर रही हूँ।

यह तो कमाल है..!! परमेश्वर ने आपको महिला फोटोग्राफर का दर्जा दिया है। अब तुम्हारा जीवन कैसा है?

यह मेरे जीवन में एक बड़ा बदलाव महसूस कराता है। जैसा कि मैंने यीशु को स्वीकार किया है, यीशु ने मेरा सिर उन लोगों के बीच ऊंचा रखा है जिन्होंने मुझे गरीब के रूप में अस्वीकार कर दिया है। प्रतिदिन यीशु मुझे भजन संहिता 32:8 के अनुसार सलाह देते हैं। मैंने लॉकडाउन के दौरान एस्तेर की तरह 3 दिनों तक उपवास और प्रार्थना की। उसके बाद हमने एक प्रार्थना समूह शुरू किया और 9 बहनों के रूप में प्रार्थना कर रहे थे। अब हम 30 बहनों के रूप में प्रतिदिन एक घंटे प्रार्थना कर रहे हैं। जैसे कि हम प्रार्थना करना जारी रखते हैं कि प्रभु महान परिवर्तन और चमत्कार कर रहे हैं।

आप नौजवानों को क्या कहना चाहेंगी?

कई बार, क्या आपको लगता है कि आप अपने जीवन में कुछ हासिल नहीं कर सकते? बहुतों के शब्द हमें तोड़ देंगे और हमारी उपेक्षा करेंगे। "आप यह नहीं कर सकते, आप बेकार हैं," लोग कहेंगे। मनुष्यों की बातों को टाल दे, और यहोवा का वचन लेकर दौड़। अपने विचारों को प्रभु को सौंप दो। वह आपकी स्थिति को बदलेगा और आपको ऊपर उठाएगा। जब आप प्रभु के वचन सुनेगें, तो जिस परमेश्वर ने मुझे जीताया है वही आपको भी जीताएगा। मेरे प्यारे नौजवानों, यदि आप किसी भी स्थिति में, किसी भी समय, केवल यीशु को थामे रहते हैं, तो आप भी सफल हो सकते हैं। विजय का परमेश्वर आपके साथ है।

बाइबिल में पक्षी।

मुर्गी।

हर महीने, लगातार हम एक पक्षी को देखते हैं और उसी के अनुरूप इस महीने "मुर्गी" के बारे में संक्षेप में बात करेंगे । आइए हम मुर्गियों की विशेषताओं और उससे जुड़े यीशु मसीह के प्रेम को देखें!

मुर्गी के बारे में कुछ रोचक तथ्य:

- मुर्गी (चिकन) एक सर्वाहारी पक्षी है जो जंगलों में पाया जा सकता है और मनुष्यों द्वारा अपने घरों में और पोल्ट्री फार्मों में भी पाला जाता है।
- पुलेट मादा मुर्गी है और कॉकरेल नर मुर्गी है।
- मुर्गियां आमतौर पर मांस और अंडे के लिए पाली जाती हैं।
- विश्व में मुर्गी की सभी प्रजातियों की उत्पत्ति लाल जंगली मुर्गी से मानी जाती है जो भारत की मूल निवासी है।

बाइबिल में मुर्गी:

हम फरीसियों और शास्त्रियों के लिए यीशु की चिंता को मत्ती 23:37; लूका 13:34 में देख सकते हैं "कितनी बार मेरी लालसा हुई कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लड़केबालों को इकट्ठा करूं, पर तुम ने न चाहा।" जब एक मुर्गी एक चील को आकाश में उड़ते हुए देखती है, जबकि उसके बच्चे कचरे के ढेर में चर रहे होते हैं, तो माँ मुर्गी तुरंत चूजों को चेतावनी देती है। माँ की चेतावनी को भांपते हुए, चूजे मुर्गी की ओर दौड़ते हैं, और मुर्गी अपने पंख फैलाती है और बच्चे एक-एक करके माँ के पंखों के नीचे छिप जाते हैं। वे जानते हैं कि माता के पंखों के नीचे बैठने से कोई खतरा नहीं है और वहाँ सुरक्षा है। इसी तरह, एक मनुष्य होते हुए जब लोग अपनी मंज़िल को जाने बिना इधर-उधर भटक जाते हैं, तो यीशु उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ते। यीशु का चरित्र खोए हुए आदमी को प्यार से गले लगाना है। परन्तु कुछ परमेश्वर के आलिंगन से दूर हो जाएंगे। यह जानना कि आपको प्रभु यीशु मसीह की सुरक्षा की आवश्यकता है और आपको अपने पास ले आना यीशु मसीह का अपरिवर्तनीय प्रेम है।

आगे हम इन आयतों में देखते हैं "मैं तेरे पंखों की आड़ में भरोसा रखूंगा" (भजन संहिता 61:4), "वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा" (भजन संहिता 91:4), "इसलिए मैं तेरे पंखों की छाया में आनन्दित होऊंगा " (भजन संहिता 63:7), "कितनी बार मैंने यह चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे लड़केबालों को इकट्ठा कर लूं, और तू ने न चाहा" (लूका 13:34)।

एक किसान ने एक मुर्गी को पाली, जिसने अंडे दिए और चूजों को सेया। वह रोज भोजन की तलाश में रहता था और उन चूजों के साथ खाता था। एक दिन जब किसान कहीं दुर गया था तो जिस झोपड़ी में मुर्गियाँ और चूजे रहते थे, उसमें आग लग गई। आग बुझाने के लिए कोई नहीं था। भीषण आग के कारण मुर्गी अपने चूजों के साथ बाहर नहीं आ सकी। कुछ घंटे बाद किसान और वहां मौजूद लोगों ने जली हुई छत को हटाते समय देखा कि मां मुर्गी पूरी तरह से जल गई। अचानक मुर्गी के अंदर से आवाज आई और जब मुर्गी को उठाया गया तो सभी चूजे जीवित थे। चाहे उसके साथ कुछ भी हुआ हो, उसने चूजों को नुकसान से बचाने के लिए अपनी जान दे दी।

प्रिय युवाओं! मुर्गी के जोश और ताकत को देखिए। अपने छोटे चूजों को बचाने के लिए, उसने साहसपूर्वक बलिदान दिया और अपना शरीर दे कर उनकी रक्षा की। इसी तरह, भले ही आप आग जैसी भयानक समस्या के बीच में खड़े हों, हमारे प्रभु की ताकत मुर्गी से कई गुना अधिक है। जब उसकी बनाई हुई मुर्गी अपने चूजों की इतनी सोच-समझकर रक्षा करती है, तो प्रभु हमारी और कितनी रक्षा करेगा?

अपनी जान दे दी क्योंकि उसने प्यार किया !!

मेरा जन्म एक मसीही परिवार में हुआ था। बचपन से ही मुझे यीशु के प्रति बहुत प्रेम है और मैं प्रतिदिन प्रार्थना करती हूँ। लेकिन मुझे नहीं पता कि प्रभु मुझसे प्यार करते हैं या नहीं। क्योंकि मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलता। इसलिए मुझे संदेह होने लगा। मुझे कैसे पता चलेगा कि यीशु मुझसे प्यार करते हैं? - शीना।

प्रिय बहन शीना! भले ही आपका सन्देह थोड़ा अलग है, आप जैसे कई लोग इसी सवाल के साथ जी रहे हैं। शीना, यीशु आपसे बहुत प्यार करते हैं, यही वजह है कि उन्होंने आपके लिए अपनी जान दे दी।

क्योंकि केवल आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलता इसलिए इस निष्कर्ष पर न पहुँचें कि यीशु आपसे प्रेम नहीं करते । यीशु हमारी प्रार्थनाओं को सुनते और उत्तर देते हैं। शीना !! कभी हमारी प्रार्थना तुरंत कुबूल हो जाती है, तो कभी देर से। परन्तु यहोवा हमारी प्रार्थना को कभी अनसुनी नहीं करता।

शीना! हम अपनी प्रार्थना में जो कुछ माँगते हैं वह परमेश्वर की इच्छा से होना चाहिए। यदि हमारी प्रार्थना स्वार्थी और परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हो, तो उस प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया जा सकता है। कई बार हमारी प्रार्थना अनुत्तरित लगती है। यह हमें ऐसा सोचने पर विवश करता है, "क्या परमेश्वर मुझे भूल गया है?" लेकिन सही समय पर वह उत्तर बहुत लाभदायक और खजाने के समान होगा।

बाइबिल में आप जैसे एक युवक ने प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना का उत्तर तुरंत नहीं दिया गया। लेकिन उसके लिए परमेश्वर का जवाब बहुत ही आश्चर्यजनक था। यूसुफ अपने पिता का प्रिय पुत्र था। उसने ऐसे काम किए जो परमेश्वर को भाते थे। पर ईर्ष्या, क्लेश, संघर्ष आदि उसके जीवन में व्याप्त थे। समस्याओं और संघर्षों के बीच भी उसने प्रार्थना करना नहीं छोड़ा और उत्तर न देने पर भी उसने प्रभु पर भरोसा करना नहीं छोड़ा। जब तक उसे उत्तर नहीं मिल गया तब तक वह प्रयास करता रहा और परमेश्वर पर विश्वास करता रहा।

एक आदमी जिसने 17 साल की उम्र में प्रार्थना की थी, उसे 13 साल बाद 30 साल की उम्र में उत्तर मिला। उसकी प्रार्थना और परमेश्वर में उसके विश्वास के परिणामस्वरूप, उसे एक राष्ट्र के शासक के रूप में पदोन्नत किया गया। उसने अपनी प्रार्थना के उत्तर के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की और अंत में उसे प्राप्त किया।

शीना! कई बार परमेश्वर देरी करता है ताकि हमारे विश्वास को मजबूत करे और बढ़ाएं । क्या हम उस समय पर विश्वास करते हैं यदि वह तुरंत उत्तर देता है? या विलम्ब होने पर भी हम विश्वास में स्थिर हैं? वह ऐसा परीक्षण करने के लिए करता है।

जब उत्तर की अपेक्षा परमेश्वर से नहीं आती है तो बहुत से किशोर यह कहते हुए प्रार्थना करना बंद कर देते हैं कि, "परमेश्वर मुझे उत्तर नहीं देता, परमेश्वर मुझसे घृणा करता है।" जब भी हमारी प्रार्थना के उत्तर में देरी हो, तो हमें यह विश्लेषण करना चाहिए कि हमारी प्रार्थना में कोई त्रुटि या गलती है या नहीं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब हम बिना परमेश्वर की इच्छा या स्वार्थ के प्रार्थना करते हैं तो अधिकांश समय परमेश्वर मौन रहते हैं।

जब एलिय्याह ने पहली बार प्रार्थना की तब आग नहीं उतरी। इसका कारण यह है कि उस प्रार्थना में, उसने स्वयं की महिमा की और "मैं, मैं" कहकर प्रार्थना की। इसलिए इसका जवाब नहीं दिया गया। वह तुरंत महसूस करता है कि उसकी प्रार्थना में गलती है और वह प्रार्थना बदल देता है। जब उस ने कहा, हे परमेश्वर, मैं तेरा दास हूं, मैं ने तेरे वचन के अनुसार किया है, तब आग स्वर्ग से उतरी और बलिदान को भस्म कर दिया।

इसलिए बिना हार माने प्रार्थना करो! परमेश्वर की इच्छा जानो और प्रार्थना करो! तब तक प्रार्थना करो जब तक परमेश्वर उत्तर न दे! प्रार्थना में विश्वासयोग्य और दृढ़ रहो। परमेश्वर आपके जीवन में महान कार्य करेंगे।

आनंदित दिल !

जैसे ही दिसंबर की घंटियाँ बजती हैं, हर किसी का दिल खुशियों से भर जाता है। जगमगाती रोशनी, टिमटिमाते सितारे, हर जगह क्रिसमस की खुशियां हमारे दिलों में आनंद लाती हैं। कुछ लोगों के लिए, उत्सव के दिन ही एकमात्र ऐसी चीज है जो उन्हें खुशी देती है। बाकी दिनों में आप शायद ही उनके चेहरों पर आनंद की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन प्रभु चाहता है कि हम हर समय आनंदित रहें। यह आपका मन है जो आनंदमय जीवन का निर्धारण करता है। एक दिन में आपका मन जितना प्रसन्न होता है, चेहरे पर उतना ही आनंद झलकता है।

क्रिसमस शब्द का उच्चारण होते ही आत्मा में कितना आनंद आता है। जब परिवार में एक बच्चे का जन्म होता है, तो पूरा परिवार बच्चे के जन्म को बहुत खुशी के साथ मनाता है। दोस्त और रिश्तेदार सभी को मिठाई खिलाकर अपनी खुशी का इजहार करते हैं। इस प्रकार एक बच्चे के जन्म से पूरे परिवार को खुशी मिलती है। परमेश्वर ने पृथ्वी पर सब कुछ बनाया ताकि मनुष्य खुश रह सके और उन्हें इन सभी चीजों का आनंद लेने और संतुष्ट रहने का आदेश दिया।

आदम और हव्वा जो पृथ्वी के पहले निवासी थे, उनके पास जो कुछ भी था उसके साथ खुशी से रहते थे। जब दोनों ने जीवन में पाप के लिए जगह बनाई, तभी से दिलों से आनंद निकल गया और उनके मन में भय, भ्रम, चिंता और पीड़ा छा गई। पाप से मिलने वाला सुख कुछ घंटों तक ही रह सकता है।

यह विश्वास करते हुए कि उसके दोस्त और पैसा उसे बहुत आनंद दे सकते हैं, छोटे बेटे ने अपने पिता की सारी संपत्ति ले ली और दुष्टता से रहने लगा। जैसे-जैसे सब कुछ कम होने लगा, वैसे-वैसे

दोस्तों और पैसे का आनंद भी कम होने लगा। पाप से मिलने वाला सुख मनुष्य को अनंत सुख नहीं देता।

उस दिन, प्रभु के एक दूत ने सुसमाचार की घोषणा की जो पूरी मानव जाति के लिए आनंद को वापस लाएगा जिन्होंने अपने जीवन में पाप को स्थान दिया था और उस आनंद को खो दिया था जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। "देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता का जन्म हुआ है, जो प्रभु मसीह है" (लूका 2:10,11)। जिस मनुष्य ने पाप किया और अपना आनंद खो दिया, उसे अनन्त सुख देने के लिए, परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह, ने एक दास का रूप धारण करके स्वयं को दीन किया, मनुष्य का पुत्र बन गया और मनुष्य को छुड़ाने और उसे सुखी बनाने के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया।

जब मसीह हमारे हृदय में जन्म लेते हैं, तो उनके द्वारा हम में अनन्त आनन्द उत्पन्न होता है, और वो आनन्द सदा बना रहता है। क्या आप जानते हैं कि मसीह के द्वारा मिलने वाला आनंद कैसा है? हमारे आसपास कोई भी हो, हम खुश रहेंगे। दाऊद अपने अनुभव में यही कहता है। "प्रभु को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा" (भजन 37:4)। जब दाऊद अपने ही घराने और निकट सम्बन्धियों उससे घृणा करने लगे और वह जंगल में अकेला भटकने लगा, तब दाऊद यहोवा में सन्तुष्ट था और कोई भी उपद्रव या कष्ट उसके आनन्द में बाधा न डाल सके। शायद आप भी इस दुनिया और अपनों पर भरोसे करने के कारण अपनी खुशियां खो रहे हैं? चिंता ना करें! क्रिसमस के इन शुभ दिनों में मेरे पास आपके लिए एक अच्छी खबर है। प्रभु यीशु मसीह के लिए जगह दें जो दाऊद के घर में पैदा हुए की आपके दिल में पैदा हों। इस साल में आपने जो भी खोया है वह आपको दोगुनी खुशी देगा और आपको खुश करेगा। आने वाला नया साल आपके लिए खुशियों भरा साल होगा।

प्रभु यीशु मसीह के लिए जगह दें जो दाऊद के घर में पैदा हुए की आपके दिल में पैदा हों

मेरे प्रिय नौजवानों! आज भी जिस स्थान पर आप पढ़ते या काम करते हैं, आपके आस-पास के लोग क्षण भर के उस तुच्छ सुख की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं। 2000 साल पहले जिस तरह एक स्वर्गदूत ने उन लोगों को खुशखबरी सुनाया था जो अपनी खुशी खो चुके थे और अंधेरे में पीड़ित थे, आप भी इन क्रिसमस के दिनों में अपने आसपास के लोगों को मसीह के जन्म की खुशखबरी सुना सकते हैं और उन्हें खुशी दे सकते हैं जो मसीह से आता है।

"प्रभु यीशु मसीह के लिए जगह दें जो दाऊद के घर में पैदा हुए की आपके दिल में पैदा हों "

मत डर! धार्मिकता का सूर्य उदय होगा!!

समस्त विश्व को प्रकाश देने वाला सूर्य परमेश्वर की एक अद्भुत रचना है। यदि आज आपका जीवन अन्धकार से घिरा है, तो प्रभु धार्मिकता के सूर्य के समान उदय होगा। कुछ लोग कहते हैं, "मेरा जीवन अंधकारमय हो गया है! मैं ऐसे जी रहा हूँ जैसे मैं बिना रास्ता जाने अंधेरे में ठोकर खा रहा हूँ।" परमेश्वर का जन अय्यूब कहता है, "...जब मैं उजियाले की बाट जोहता रहा, तब अन्धकार छा गया।" (अय्यूब 30:26)। उसने यह इसलिए कहा, क्योंकि वह नुकसान, मृत्यु, बीमारी, शर्म और तिरस्कार जैसे विभिन्न प्रकार के अंधेरे से घिरा हुआ था। उसका जीवन पूरी तरह से अंधकारमय हो गया था। इसलिए बड़े संकट में, उसने विलाप किया "परन्तु जब मैं भलाई की बाट जोहता था, तो बुराई मुझ पर आ पड़ी, और जब मैं उजियाले की बाट जोहता रहा, तब अन्धकार छा गया।"

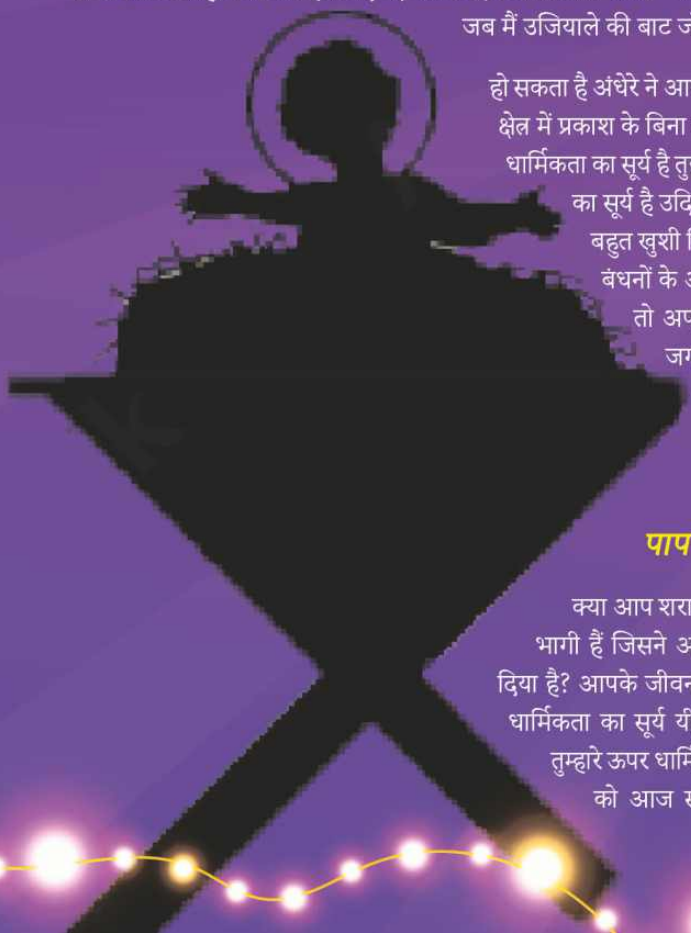

हो सकता है अंधेरे ने आपके जीवन के एक निश्चित हिस्से को ढक दिया है, और आप उस विशेष क्षेत्र में प्रकाश के बिना ठोकर खा रहे हैं। आपको देखकर, प्रभु कहते हैं, " मत डर, यीशु, जो धार्मिकता का सूर्य है तुझ पर उदय होगा" (मलाकी 4:2)। यदि यीशु का प्रकाश, जो धार्मिकता का सूर्य है उदित होगा , तो आपके जीवन का अंधकार मिट जाएगा, जिससे आपको बहुत खुशी मिलेगी। हम पवित्र बाईबल में देखते हैं कि पाप, श्राप, बीमारी, शैतानी बंधनों के अँधेरे में रहने वाले लोग ने जब 'यीशु मसीह' जो महान ज्योति है देखा तो अपनी गुलामी से मुक्त हो गए। यीशु मसीह भी कहते हैं, "जब तक मैं जगत में हूँ, मैं जगत की ज्योति हूँ।" (यूहन्ना 9:5)। यीशु मसीह इस संसार में ज्योति बनकर आए। यदि यीशु मसीह जो प्रकाश है आपके जीवन में आएगा, तो आपका जीवन प्रकाश से भर जाएगा और अंधकार मिट जाएगा।

पाप का अँधेरा:

क्या आप शराब, नशा, जुए की लत जैसे पापों के भागी हैं जिसने आपके जीवन को अँधेरे में बदल दिया है? आपके जीवन को प्रकाश में बदलने के लिए, धार्मिकता का सूर्य यीशु मसीह आपसे मिल रहा है। तुम्हारे ऊपर धार्मिकता का सूर्य उदय होगा। परमेश्वर को आज स्वयं में कार्य करने दें। यदि आप

मत डर! धार्मिकता का सूर्य उदय होगा!!

समस्त विश्व को प्रकाश देने वाला सूर्य परमेश्वर की एक अद्भुत रचना है। यदि आज आपका जीवन अन्धकार से घिरा है, तो प्रभु धार्मिकता के सूर्य के समान उदय होगा। कुछ लोग कहते हैं, "मेरा जीवन अंधकारमय हो गया है! मैं ऐसे जी रहा हूँ जैसे मैं बिना रास्ता जाने अंधेरे में ठोकर खा रहा हूँ।" परमेश्वर का जन अय्यूब कहता है, "...जब मैं उजियाले की बाट जोहता रहा, तब अन्धकार छा गया।" (अय्यूब 30:26)। उसने यह इसलिए कहा, क्योंकि वह नुकसान, मृत्यु, बीमारी, शर्म और तिरस्कार जैसे विभिन्न प्रकार के अंधेरे से घिरा हुआ था। उसका जीवन पूरी तरह से अंधकारमय हो गया था। इसलिए बड़े संकट में, उसने विलाप किया "परन्तु जब मैं भलाई की बाट जोहता था, तो बुराई मुझ पर आ पड़ी, और जब मैं उजियाले की बाट जोहता रहा, तब अन्धकार छा गया।"

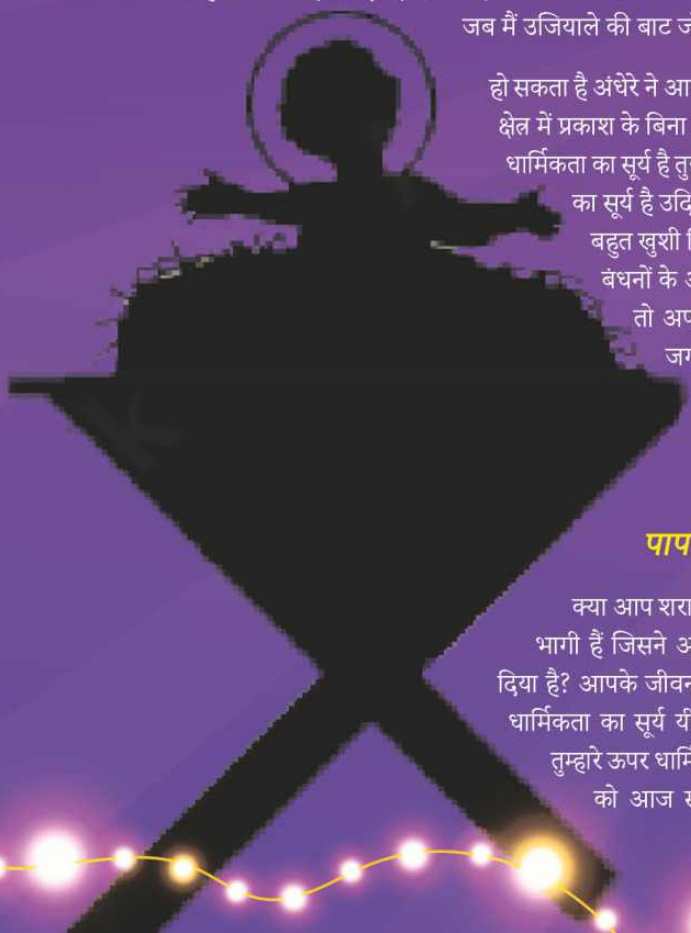

हो सकता है अंधेरे ने आपके जीवन के एक निश्चित हिस्से को ढक दिया है, और आप उस विशेष क्षेत्र में प्रकाश के बिना ठोकर खा रहे हैं। आपको देखकर, प्रभु कहते हैं, " मत डर, यीशु, जो धार्मिकता का सूर्य है तुझ पर उदय होगा" (मलाकी 4:2)। यदि यीशु का प्रकाश, जो धार्मिकता का सूर्य है उदित होगा , तो आपके जीवन का अंधकार मिट जाएगा, जिससे आपको बहुत खुशी मिलेगी। हम पवित्र बाईबल में देखते हैं कि पाप, श्राप, बीमारी, शैतानी बंधनों के अँधेरे में रहने वाले लोग ने जब 'यीशु मसीह' जो महान ज्योति है देखा तो अपनी गुलामी से मुक्त हो गए। यीशु मसीह भी कहते हैं, "जब तक मैं जगत में हूँ, मैं जगत की ज्योति हूँ।" (यूहन्ना 9:5)। यीशु मसीह इस संसार में ज्योति बनकर आए। यदि यीशु मसीह जो प्रकाश है आपके जीवन में आएगा, तो आपका जीवन प्रकाश से भर जाएगा और अंधकार मिट जाएगा।

पाप का अँधेरा:

क्या आप शराब, नशा, जुए की लत जैसे पापों के भागी हैं जिसने आपके जीवन को अँधेरे में बदल दिया है? आपके जीवन को प्रकाश में बदलने के लिए, धार्मिकता का सूर्य यीशु मसीह आपसे मिल रहा है। तुम्हारे ऊपर धार्मिकता का सूर्य उदय होगा। परमेश्वर को आज स्वयं में कार्य करने दें। यदि आप

परमेश्वर से मांगे, "यीशु, मेरा जीवन अंधकार में डूबा हुआ है। पाप के इस अंधकार को दूर कर दें। मुझे आपके प्रकाश की आवश्यकता है।" उसका प्रकाश आपके जीवन पर आएगा और एक बड़ा बदलाव लाएगा।

परमेश्वर का वचन कहता है, "सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आने वाली थी।" (यूहन्ना 1:9) 'यीशु मसीह' सच्ची ज्योति है एक व्यक्ति को चमकने के योग्य बनाने में सक्षम है बावजूद इसके की उसने वर्षों पाप किया हो और उसे अंधेरे के शक्तिशाली जाल के अभिशाप से छुड़ाता है। इस दुनिया में कई तरह की कपटपूर्ण ज्योतियां हैं।

वे नकली ज्योति दिखाकर लोगों को धोखा देते हैं और कहते हैं, 'यह ज्योति है! यह परमेश्वर है!' वे लोगों को धोखा देने के लिए कई अन्य काम भी करते हैं।

परन्तु यीशु मसीह सच्ची ज्योति है। वह ज्योति मनुष्य द्वारा नहीं बनायी गयी और न ही मानव जाति को धोखा देती है! वह सच्चा जीवित परमेश्वर है जिसने उच्चतम स्वर्ग, पृथ्वी और पूरे ब्रह्मांड का निर्माण किया! वह वही है जो इस पृथ्वी पर धार्मिकता के सूर्य के रूप में आया ताकि अंधकार में रहने वाले लोगों के जीवन को प्रकाश में बदल सके! जब वह आज आपके जीवन और परिवार में उदय होगा, तो हर प्रकार का अंधेरा दूर हो जाएगा।

बीमारी का अंधेरा :

यदि परिवार का कोई सदस्य बीमार पड़ जाए तो पूरा परिवार चिंतित हो जाता है। मैंने अपने परिवार में इस तरह की स्थिति देखी है। जब मैं अपनी किशोरावस्था में बीमार पड़ा, तो मेरा पूरा परिवार दुःख से भर गया! कोई खुशी नहीं थी! हमारे घर में अंधेरा छा गया। 'बीमारी' दर्दनाक है, और यह हमारे पूरे जीवन को बदल देती है।

पवित्र बाईबल में ऐसी ही एक घटना का उल्लेख है। 12 साल तक रक्तस्राव से पीड़ित रहने के कारण एक महिला का जीवन अंधकारमय हो गया। बीमारी के कारण उसने अपनी शांति खो दी थी। उसका दिल दुख से भर गया था! वह किसी तरह इस अंधेरे से छुटकारा पाना चाहती थी, और चिकित्सक को दिखाने और इलाज कराने के लिए अपनी सारी संपत्ति भी बेच दी थी। तौभी वह चंगी न हुई। जब वह यीशु जो ज्योति के पास आई, तो वह अपने उस रोग से चंगी हो गई जो अन्धकार के समान था।(मरकुस 5:25-34)।

इसी तरह की एक और घटना का जिक्र पवित्र बाइबिल में मिलता है। एक आदमी 38 साल तक बिस्तर पर पड़ा रहा। 38 साल तक उसके जीवन में 'बीमारी' नाम का अंधेरा छाया रहा। उसने सोचा होगा, "क्या मेरे जीवन में प्रकाश आएगा? मैं मरने के दिन तक इस अंधेरे में रहुंगा "। लेकिन जब उसने यीशु का जो धार्मिकता का सूर्य है सामना किया, तो उनका जीवन जो 38 वर्षों से अंधकार में था, प्रकाश में बदल गया! (यूहन्ना 5:1-9)। मलाकी 4:2 में प्रभु का वचन कहता है, "...धार्मिकता का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे"। यीशु मसीह के पंखों में चंगाई है। यदि वह प्रकाश हमारे जीवन में प्रवेश करे तो हम चंगे हो जाएँगे!

शैतानी अंधकार:

प्रेरित पौलुस कहता है, "क्योंकि उसने हमें अन्धकार के राज्य से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है" (कुलुस्सियों 1:13)। इस वचन में 'अन्धकार का राज्य' शैतान के बुरे कामों को संदर्भित करता है जैसे, जादू टोना, तंत्र मंत्र, दूसरों को चोट पहुँचाने के लिए जादू-टोना करना। अंधकार के ये कार्य कई परिवारों को प्रभावित करते हैं और उन्हें अंधकार से भर देते हैं। अंधकार भय लाता है। शैतान दुष्ट है और अंधकार में काम करता है। कवह हमेशा हमारी शांति और जीवन को नष्ट करने का काम करता है! मृत्यु का भय सबसे बुरा है! शैतान इस प्रकार का भय लाता है। आमतौर पर अंधकार शब्द भय का कारण बनता है! कोई व्यक्ति कितना भी बहादुर क्यों न हो, यदि वह अंधकार में अकेला चलता है, तो वह अकेलापन भय लाता है। इसके विपरीत, वह दिन के उजाले में बहादुर होगा। इसलिए अंधकार भय पैदा करता है।

हो सकता है आप किसी प्रकार के भय में हैं! या शैतान आपके जीवन में किसी प्रकार का अंधकार ला सकता है और आपकी शांति को नष्ट कर सकता है। यदि आप भय से मुक्त नहीं हुए हैं, तो यह आपको मानसिक रूप से उदास कर देगा। आप शांति खो देंगे, बेचैन रातें बिताएंगे और अंत में एक दयनीय जीवन जीएंगे! अंधकार से मुक्ति एक तत्काल आवश्यकता है! यहोवा तुमसे कहता है, "डरो मत, धर्मियों का सूर्य उदय होगा!" जब धर्म का सूर्य उदय होगा, तब अन्धकार मिट जाएगा।

मेरे प्रियो, जब धार्मिकता का सूर्य यीशु आपके जीवन में आयेगा, तो आपके जीवन का हर प्रकार का अंधकार दूर हो जायेगा! प्रभु यीशु मसीह ने अपने आप को बलिदान करके हमारे पापों, बीमारी, श्रापों और शैतानी बंधनों को क्रूस पर उठा लिया, ताकि हम मुक्त हो जाएँ। इसलिए, वह आप पर अपना प्रकाश चमका सकता है और आपको सभी प्रकार के अंधकार से मुक्त कर सकता है। लेकिन यह तभी संभव होगा जब आप उसके लिए जगह देंगे। परमेश्वर आपके जीवन में प्रकाश के रूप में आएंगे और अद्भुत करेंगे।

छोटे बेटे के पिता की खुशी।

एक पिता के दो पुत्र थे। वह धनी था, उसके अनेक नौकर-चाकर थे और वह आदरणीय था। छोटा बेटा प्रेमहीन था। जो व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा का भी पालन नहीं करता (निर्गमन 20:12)। इसलिए वह अपने पिता के साथ नहीं रहना चाहता था और स्वतंत्र होना चाहता था और घर से बहुत दूर जाना चाहता था और उसने अपने पिता से संपत्ति का हिस्सा बांटने को कहा। कुछ दिनों के बाद छोटे बेटे ने अपनी सारी संपत्ति बेच दी और अपने पिता को छोड़कर दूर देश जाने का फैसला किया, घर छोड़ दिया और दूर देश में एक दुष्ट जीवन व्यतीत किया। उसने अपनी सभी बुरी आदतों के द्वारा पाप के आनंद का मज़ा लिया। चूंकि उसके पास अधिक धन था, दुष्ट मित्र उसके साथ जुड़ गए। जब सब धन समाप्त हो गया, तो जो मित्र उसके धन का भोग करने आए थे, वे उसे भूल गए। वह जाकर उस देश के एक नागरिक के पास जा मिला, और उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा। और उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे, उसने अपना पेट भरा। और उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे, उसने अपना पेट भरा। जब उसे होश आया और अपनी स्थिति का एहसास हुआ, तो उसे एहसास हुआ कि अपने पिता को छोड़ना गलत था। तब वह उठकर अपने पिता के घर यह कहने को गया, कि "हे पिता, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है, और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं। मुझे एक मजदूर समझकर रख लो।" छोटे बेटे को देखकर पिता ने बड़े आनंद से उसका स्वागत किया और दावत दी।

प्यारे नौजवानों क्या आप छोटे बेटे की तरह नासमझी से सांसारिक सुखों में मग्न हैं और क्या आप अपना सुख खो बैठे हैं ? यदि आप आज पश्चाताप करते हैं और यीशु के पास आते हैं, तो आपको अनंत आनंद मिलेगा।

सारा की खुशी।

इब्राहीम एक प्रभावशाली व्यक्ति था, और उसकी पत्नी सारा चिंतित थे कि उनके कोई बच्चा नहीं है। उनके संकट को देखकर, परमेश्वर ने इब्राहीम को बुलाया और कहा, "आकाश के बहुत से तारों को देखो। तुम उन्हें गिन नहीं सकते, और तुम्हारा वंश इस प्रकार होगा।" लेकिन इब्राहीम और सारा बहुत बूढ़े थे। उनमें जरा भी अविश्वास नहीं था कि इस उम्र में उन्हें बच्चा कैसे हो सकता है। यहोवा ने अपने वचन के अनुसार इब्राहीम को जो सौ वर्ष का था और सारा नब्बे वर्ष की थी, तब उस ने उन्हें इसहाक दिया, और उनको आनन्द से भर दिया। उनके हृदय आनंद से भर गया और उमड़ने लगा.
(उत्प. 21:2, उत्प. 17:17, 18:12)।

प्रिय नौजवानों! जब आप भरोसा करते हैं और इब्राहीम और सारा की तरह प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं, तो परमेश्वर आपकी प्रार्थना सुनने और आपको आनंद देने के लिए तैयार है। क्या आप उस आनंद को प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं?

यूसुफ की खुशी।

याकूब अपने सब पुत्रों से बढ़कर यूसुफ से प्रीति रखता था, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र था। जब यूसुफ के भाई ने यह देखा तब वे उससे डाह और बैर करने लगे। यूसुफ ने कुछ स्वप्न देखे और उन्हें अपने भाइयों को बताया। उन स्वप्नों का अर्थ था, की एक दिन वे सब यूसुफ के आगे झुकेंगे। इसलिए वे यूसुफ से और भी अधिक घृणा करने लगे। एक दिन यूसुफ के भाई शकेम नगर के पास भेड़ चरा रहे थे। उसके पिता ने यूसुफ को उनका पता लगाने के लिये भेजा। उन्होंने यूसुफ को दूर से आते देखा। उन्होंने कहा "वह सपनों का राजा आ रहा है। चलो उसे मार डालते हैं!" जब यूसुफ उनकी ओर आया, तब उन्होंने उसे पकड़कर एक गहरे गड़हे में डाल दिया। भाइयों ने उसके पिता को बताया कि किसी जंगली जानवर ने यूसुफ को मार डाला है। याकूब यूसुफ के कारण रोता रहा। मिद्यानियों ने यूसुफ को खरीद लिया और उसे मिस्र ले गए। वहाँ उन्होंने उसे पोतीपर नाम के एक बड़े अधिकारी के दास के रूप में छोड़ दिया। उस स्थिति में भी यहोवा यूसुफ के साथ था। एक दिन पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को उसके कपड़ों से खींच लिया ताकि वह उसके साथ आए और पाप करे।

परन्तु यूसुफ अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर दौड़ा, और बाहर भाग गया। पोतीपर की पत्नी ने पोतीपर से झूठ बोला कि यूसुफ ने उसके साथ पाप किया है। जब पोतीफर ने यह सुना तो उसका क्रोध भड़क उठा। सो उसने यूसुफ को बन्दीगृह में डाल दिया। परन्तु यहोवा यूसुफ को कभी नहीं भूला। उसने उसे मिस्र का शासक बनाया। यहोवा ने उसके जीवन में आनन्द दिया (उत्पत्ति 39)।

प्रिय नौजवानों! परमेश्वर के पास आपके लिए एक योजना है। जब आप यूसुफ की तरह सब बातों में विश्वासयोग्य रहेंगे, तो प्रभु आपको प्रसन्नता से सराबोर कर देगा।

रूत की खुशी।

नाओमी और उसका परिवार मोआब के देश में चले गए। नाओमी एक विधवा माँ थी। उसके दो बेटे थे। एक ने ओरपा से और दूसरी ने रूत से विवाह किया। उसके दोनों बेटे मर चुके थे। उसने अपनी बहुओं को पुनर्विवाह कर अपने परिवारों के साथ जाने के लिए कहा। ओर्पा ने अपनी मौसी को पीछे छोड़ दिया। किन्तु रूत अपनी सास नाओमी के साथ रहती थी। नाओमी के साथ रहकर उसे खुशी मिली।

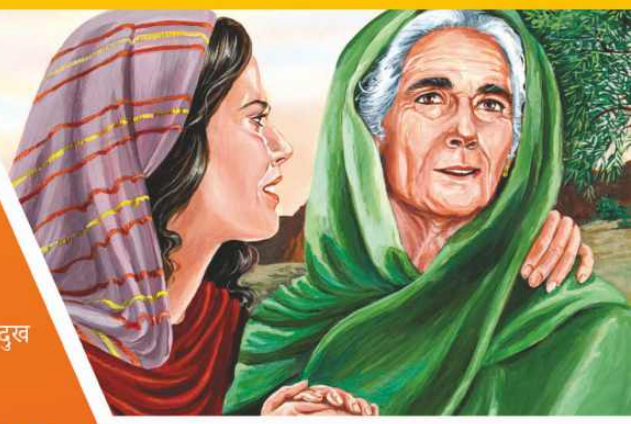

वह अपने साथ यह कहती थी, "जहाँ कहीं तू जाएगी, मैं जाऊँगी, और जहाँ कहीं तू टिकेगी वहाँ मैं टिकूँगी; तेरी प्रजा मेरी प्रजा ठहरेगी, और तेरा परमेश्वर, मेरा परमेश्वर।" बोअज ने उससे विवाह किया और उसे एक पुत्र दिया। खुशी ने दुख की जगह ले ली। (रूत अध्याय 1-4)।

प्रिय नौजवानों! क्या आप में भी कुछ कमी है ? रूत की तरह, जब आप अपने फैसलों के बारे में सचेत रहते हैं, तो आपको अपने जीवन में खुशी मिलेगी।

मीका

(परमेश्वर की तरह कौन है?)

प्रिय युवाओं! इस महीने हम मीका की किताब के बारे में बात करने जा रहे हैं, जो भविष्यवाणियों की छोटी किताबों में से एक है। आइए हम छोटी भविष्यवाणियों की छठी पुस्तक, "मीका की पुस्तक" के बारे में कुछ रोचक जानकारी प्राप्त करें।

परिचय

मीका की पुस्तक दिखाती है कि लोग असफल हुए क्योंकि उन्होंने उस वाचा को पूरा नहीं किया जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। वाचा के प्रति आज्ञाकारिता आशीषों को साथ लाती है। वाचा का पालन न करना श्राप को लाता है और प्रतिज्ञा भूमि से दूर रखता है । मीका यहूदा के अन्याय को प्रकट करता है। साथ ही, यह पुस्तक परमेश्वर के न्याय को प्रकट करती है, और यह उचित है कि परमेश्वर उन्हें दण्ड दे। न्यायी, भविष्यद्वक्ता, और याजक उन पर अन्धेर, घूसखोरी, लोभ, छल, घमण्ड, और अपराध के पापों के विरूद्ध दोष लगाते हैं। यह सिद्ध करता है कि परमेश्वर की ताड़ना; उसका प्रेम उन्हें फिर से बहाल कर देगा।

शिक्षक: मीका

समय: 735-719 ई.पू.
अध्याय : 7
आयतें: 105
शब्द: 3,153
महत्वपूर्ण पात्र: मीका, यूहन्ना, आहाज, हिजकिय्याह

मीका-सारांश

पहला संदेश: सामरिया और यहूदा के लिए न्याय

- आने वाले न्याय को प्रकट करना (1:1-7 पद)
- लोगों के लिए विलाप(1:8-16 पद)
- यहूदा का पाप (2:1-11पद)
- भविष्य के विषय में प्रकाशन (2:12,13 पद)

दूसरा संदेश: मुक्ति के बाद विनाश

- अगुवों पर न्याय (3:1-12 पद)
- राष्ट्र पर परमेश्वर के राज्य की आशीषें (4:1-5:5 पद)

तीसरा संदेश: पाप की ताड़ना और आशीष की प्रतिज्ञा

- परमेश्वर का आरोप (6:1-5 पद)
- राष्ट्र के प्रति मीका की प्रतिक्रिया (6:6-8 पद)
- पाप के कारण परमेश्वर का न्याय (6:9-16 पद)
- मीका की पुष्टि है कि परमेश्वर अद्वितीय है (7:18-20 पद)

मीका में मसीह

मीका ने मसीह को याकूब के परमेश्वर (4:2), राष्ट्रों के न्यायी (4:3) और बेतलेहेम शहर में पैदा होने वाले राजा (5:2) के रूप में प्रकट किया।

प्रमुखताएं

1. यह पुस्तक नए नियम में याकूब की पुस्तक के समान है जो घमंडी अमीरों द्वारा उत्पीड़ित लोगों के न्याय के लिए है (मीका 6:6-8, याकूब 1:27)।
2. मीका के शब्द कई बार प्रत्यक्ष और व्यंग्यात्मक होते हैं लेकिन दूसरे समय में यह काव्यात्मक, नाटकीय और साहित्यिक समृद्ध होते हैं।
3. यशायाह की तरह, मीका परमेश्वर की बुलाहट और परमेश्वर की आत्मा की भविष्यवाणी पर जोर देता है (यशायाह 48:16, 59:21; मीका 3:8)।

आनंदित दिल

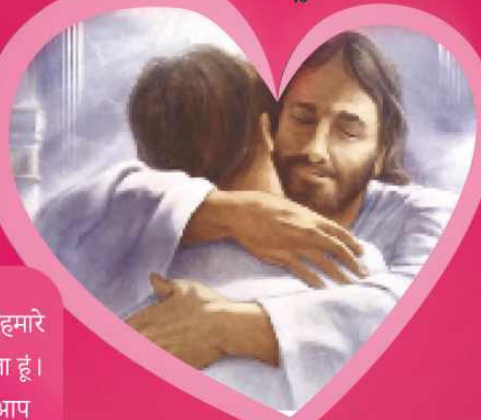

मसीह में अतिप्रिय, मैं आप सभी को हमारे उद्धारकर्ता के नाम में अभिनंदन करता हूं। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप सभी प्रभु यीशु मसीह में विश्वास में बढ़ते रहें। आइए इस महीने के लेख में आते हैं। हमारे लेख का शीर्षक है "आनंदमय हृदय"। बाईबल कहती है " प्रभु को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा" (भजन 37:4)। आइए हम इस लेख के माध्यम से इस प्रश्न का उत्तर जानें, की "प्रभु में स्वयं को कैसे आनंदित करें?"

आपको और मुझे अक्सर अपनी परिस्थितियों के आधार पर उदास, खुश या चिंतित देखा जाता है। जब हम आशीष का अनुभव करते हैं तो खुश होना और जब हम किसी समस्या का सामना करते हैं तो चिंता करना बहुत स्वाभाविक है। लेकिन दोस्तों, प्रभु में आनंदित होना कोई ऐसी चीज नहीं है जो स्वाभाविक रूप से हर समय होता है। दूसरे शब्दों में, जब हम विपत्ति का सामना करते हैं, तो खुश रहना असंभव लग सकता है। इसलिए दोस्तों, कई बार प्रभु में आनंदित रहना एक ऐसी चीज है जिसे हमें पूरे मन से करने की जरूरत है। एक सत्य जिसे हमें प्रभु में आनंदित रहने के लिए समझने की आवश्यकता है वह यह है कि वह जो सुख देता है वह उसके हाथ के आशीषों पर निर्भर नहीं है, यह उस पर निर्भर है। वह आनन्द परमेश्वर के साथ हमारे संबंध से उत्पन्न होता है। पद "वह हमें कभी नहीं छोड़ता और न ही हमें त्यागता है" का अर्थ है कि वह हमारे साथ है चाहे हम किसी भी प्रकार के कष्ट में क्यों न हों। वह गहरा विश्वास कि वह हमारे साथ है, हमें उसमें आनन्दित होने के लिए बल देता है।

हां दोस्तों। राजा दाऊद के बारे में सोचिए जिसने इस भजन को लिखा (37)। तथ्य यह है कि, राजा दाऊद द्वारा लिखा गया यह भजन, जो हमेशा युद्धों, वर्षों तक राजा शाऊल द्वारा पीछा किए जाने, अपने सहयोगियों द्वारा विश्वासघात, शत्रुओं के आक्रमण जैसी समस्याओं का सामना कर रहा था, इस बात का प्रमाण है कि आनंद परिस्थितियों पर निर्भर नहीं, बल्कि परमेश्वर है । उसी तरह, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो: और मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो" फिलिप्पियों 4:4 में प्रेरित पौलुस कहता है। पौलुस के शब्दों से, जो सुसमाचार के मार्ग में अनगिनत परीक्षणों और संघर्षों से गुज़रे, यह स्पष्ट है कि, प्रभु में आनंदित होना परिस्थितियों से परे पूरे मन से तय की जाने वाली चीज़ है। यह जानना कि परमेश्वर अच्छा है और यह कि हम उसके साथ एक जीवित संबंध में हैं, हमें उसमें आनन्दित होने के लिए प्रेरित करता है।

इतना ही नहीं दोस्तों, भजन संहिता 37:4 के वचन का बाद वाला भाग हमें बताता है कि परमेश्वर हमारे मन की इच्छाओं को पूरा करेगा। जब हम उसमें आनंदित होते हैं तो हमें भरोसा होता है कि हमारे हृदय की प्रार्थनाएँ उसकी इच्छा के अनुसार होंगी।

एक और बात, उदाहरण के लिए, जब एक बेटा या बेटी अपने पिता में आनन्दित होते हैं तो कल्पना करें कि उस पिता के हृदय में कितना आनंद आता है। तब पुत्र या पुत्री अपने पिता से जो कुछ भी मांगते हैं, क्या वह उसे तुरंत नहीं देंगे?

हां, प्रिय भाई और बहन जब हम अपने प्रभु परमेश्वर में आनंदित होते हैं तो वह निश्चित रूप से हमारे हृदय के मनोरथों को पूरा करता है।

विश्वास का एक कदम उठाएं, विश्वास में छलांग देखने के लिए।

भला परमेश्वर आपको आशीष दे। आमीन।

दृढ़ कदम

युवा उपलब्धि हासिल करने वालों को मेरी शुभकामनाएं। मुझे उम्मीद है कि आप हर दिन कड़ी मेहनत कर रहे हैं और एक विजेता बनने के लिए बढ़ रहे हैं। कोई भी पैदाइशी विजेता नहीं होता है। हर उम्र में हम जो सबक सीखते हैं, लक्ष्य हासिल करने की लगन और खुद पर आपका विश्वास ही आपको सफल बनाता है। चिंता मत करो कि यह साल खत्म हो गया है, हमारे पास अभी भी अगला साल है। यहां एक विजेता की जीवन यात्रा है जो आपको एक विजेता बनने के लिए और अधिक आत्मविश्वास देगा!

प्रेमलता अग्रवाल का जन्म 1963 में पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के सुखिया भोकारी नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। वह एक ही घर में 30 से अधिक लोगों के साथ एक संयुक्त परिवार में पली-बढ़ी। प्रेमलता की रुचि केवल पढ़ाई में ही नहीं बल्कि खेलों में भी थी। बहुत कम उम्र में उनकी शादी हो गई। प्रेमलता का जीवन सभी महिलाओं की तरह था और बहुत कम उम्र में ही वे दो बेटियों की माँ बन गईं और उन्होंने अपना पूरा ध्यान घर के कामों को देखने और बच्चों को पालने में लगा दिया। बच्चे बड़े होने लगे। प्रेमलता की खेलों में रुचि थी। लेकिन उनके माता-पिता ने उन्हें खेल में ध्यान नहीं लगाने दिया। इसलिए उन्होंने अपने बच्चों को टेनिस में प्रशिक्षण लेने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि कम से कम वे खेल के क्षेत्र में सफल हों।

एक दिन, वह अपनी बेटियों को टेनिस प्रशिक्षण के लिए जमशेदपुर के जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में ले गईं, जहां साइनबोर्ड पर टाटा स्टील एडवेंचर फाउंडेशन द्वारा आयोजित दल-मा हिल ट्रेक (जमशेदपुर के बाहरी इलाके में एक छोटी पहाड़ी) लिखा था। इस पहाड़ी ट्रेकिंग में 500 से अधिक लोगों ने भाग लिया। प्रेमलता ने भी इसमें भाग लिया और 500 में से तीसरा स्थान हासिल किया। उन्हें इस जीत पर विश्वास नहीं हो रहा था।

जीतने के बाद वह अपना सर्टिफिकेट लेने के लिए टीएसएएफ कार्यालय गई। कार्यालय में प्रवेश करते ही प्रसिद्ध पर्वतारोही बछेंद्री पाल के हिमालयी साहसिक कारनामों की कई तस्वीरें देखकर चकित प्रेमलता ने अपनी बेटियों को साहसिक खेलों में नामांकित करने का फैसला किया और बछेंद्री से कहा कि उनकी बेटियों को साहसिक खेलों में प्रशिक्षित होना चाहिए। तो उन्होंने कहा कि इसमें उनकी बेटियों को शामिल किया जाए। तुरंत ही बछेंद्री पाल ने प्रेमलता से पूछा "तुम क्यों शामिल नहीं हो जातीं?" उसने बिना कुछ सोचे समझे

मौके का फायदा उठाया। प्रेमलता तब 35 साल की थीं। 2008 में बछेंद्री पाल के मार्गदर्शन में, उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में माउंट किलिमंजारो पर चढ़ाई की। पहाड़ से नीचे उतरते समय बछेंद्री ने प्रेमलता से कहा, "आपको माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। आपके पास शीर्ष तक पहुंचने के लिए सभी कौशल हैं, आप कोशिश क्यों नहीं करते"। लेकिन उन्होंने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया और कहा कि वह अपने परिवार से बात करेंगी और फिर अपना फैसला बताएंगी, इसका जवाब देने में उन्हें दो साल से ज्यादा का वक्त लग गया। तब तक उसने अपनी बड़ी बेटी की शादी पूरी कर ली थी और उसने अपनी दूसरी बेटी को उच्च शिक्षा के लिए नामांकित किया।

दो साल बाद जब उसने अपने पति को एवरेस्ट अभियान के बारे में बताया, तो वह मान गया और उसके परिवार और सास ने सहयोग किया। कई महिलाओं ने प्रेमलता की सास को फोन कर पूछा कि उनकी बहू यह ट्रैकसूट पहनकर क्यों दौड़ रही है? क्या उसे पहाड़ पर चढ़ना है, क्या उसके पास घर का काम नहीं है? हालाँकि उन्होंने पूछना शुरू किया, लेकिन प्रेमलता की सास ने उसका साथ दिया। उसने यह कहते हुए की"48 साल सिर्फ एक संख्या है, जब आप सोचते हैं कि आप इसे समाप्त कर सकते हैं," उसे प्रोत्साहित किया। प्रेमलता ने दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर पहुंचने के लिए अपना प्रशिक्षण शुरू किया। इसके बाद उन्हें कई बाधाओं का सामना करना पड़ा जैसे उनके टखनों में लगातार दर्द, आहार में बदलाव, जलवायु में बदलाव आदि।

जब वह इन सब से थक गई थी, तो भी वह यही सोचती थी कि चोटी पर तिरंगा झंडा फहराना है । 26,000 फीट की ऊंचाई पर प्रतिकूल मौसम की स्थिति के कारण टीम वापस लौट गई। जब मौसम ठीक हो गया, तो वे फिर से 29,032 फीट की चढ़ाई करने के लिए तैयार हो गए। 20 मई, 2011 को प्रेमलता ने 48 साल की उम्र में पैर में दर्द की शिकायत के साथ एवरेस्ट पर चढ़ाई की। वह दुनिया की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट पर चढ़ने वाली और तिरंगा झंडा फहराने वाली सबसे उम्रदराज भारतीय महिला बनीं। इतना ही नहीं, उन्होंने उत्तरी अमेरिका के डेनाली पर्वत पर भी चढ़ाई की। उन्होंने प्रत्येक महाद्वीपीय के शिखर पर भारतीय ध्वज फहराया। 2013 में, उन्हें प्रतिष्ठित पदम श्री पुरस्कार मिला। उन्हें वर्ष 2017 के लिए मॉडल तेनजिंग नोर्गे राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रिय नौजवानों! अपने लक्ष्य को पाने के लिए उम्र कोई बाधा नहीं है। लेकिन जब कोई अवसर आपके सामने आए तो उसे हाथ से जाने न दें और साथ ही दूसरों से प्रभावित होकर बीच में न छोड़ दें, आगे बढ़ते रहें। कितने भी दिन, समय और वर्ष क्यों न बीत जाएँ, अपने द्वारा उठाए गए कदमों पर दृढ़ता से आगे बढ़ें। एक दिन जब दुनिया आपकी ओर देखेगी, आप शीर्ष पर होंगे। आप एक पहाड़ को देखने और आश्चर्य करने के लिए नहीं बने हैं कि यह कितना बड़ा है। आपको पहाड़ पर चढ़ने और उन पहाड़ों पर अपनी जीत के झंडे गाड़ने के लिए बनाया गया है। यह न भूलें कि सफलता आपका इंतजार कर रही है। क्या आप नीचे से सफलता का आनंद लेने जा रहे हैं? या आप जीत को अपने हाथ में रखने जा रहे हैं? अपने लिए फैसला करें!

प्रार्थना गाइड

दिसंबर **2022**

कोरोना वायरस से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लाखों लोगों की मौत हो चुकी है. सिर्फ साल 2020 में, दुनिया भर में करीब 7.1 करोड़ लोग गरीबी में धकेल दिए गए हैं। इसमें 79% भारत के हैं। विशेष रूप से, भारत में, COVID आपदा के कारण, 5.6 करोड़ गंभीर गरीबी की ओर धकेल दिए गए हैं। गरीबी की जनगणना जो 2019 में 8.4% देखी गई थी, जो 2020 में बढ़कर 9.3% हो गई है। विश्व बैंक द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, 2020 में 7.1 करोड़ लोगों को अत्यधिक गरीबी में धकेल दिया गया। दुनिया में गरीब लोगों की संख्या बढ़कर 70 करोड़ हो गया है।

गरीबी

प्रार्थना विषय :

1. आइए हम 70 करोड़ लोगों की आजीविका के उत्थान के लिए प्रार्थना करें जो गरीबी रेखा से नीचे हैं।

2. आइए हम उन गरीब लोगों की स्थिति में परिवर्तन के लिए प्रार्थना करें जो भोजन के बिना पीड़ित हैं; और उनके लिए उचित भोजन की व्यवस्था करनी होगी।

3. भारत में, 5.6 करोड़ गरीबी की स्थिति की ओर धकेले दिए गए हैं। आइए हम प्रार्थना करें कि भारत सरकार इसे गरीबी मुक्त राष्ट्र बनाने के लिए कदम उठाए।

4. आइए हम प्रार्थना करें कि गरीबी के कारण होने वाले जीवन के नुकसान को रोका जा सके।

विनाशकारी डेटिंग एप्लिकेशन।

दुनिया भर में बहुत कम वास्तविक डेटिंग ऐप्स हैं। हालांकि, प्ले स्टोर में 2000 फर्जी एप्लिकेशन हैं। प्रसिद्ध डेटिंग एप्लिकेशन से उनके प्रतीक चिन्ह और वर्तनी में केवल थोड़ा सा अंतर होगा। अनजाने में डाउनलोड होने पर यह एक पूर्ण खतरा है। अकेले टिंडर पर ही 1,200 फर्जी एप्लिकेशन हैं। डेटिंग ऐप घोटालों से नुकसान में अमेरिकी नंबर एक पर है। उन्हें हर साल 8000 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। तमिलनाडु के युवा पुरुषों और महिलाओं के जीवन में शहर से लेकर गाँव तक डेटिंग एप्लिकेशन घुसपैठ कर चुके हैं। इसमें "ट्रूली मैडली" ऐप कई लोगों का पसंदीदा है। चेन्नई में सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला एप्लिकेशन टिंडर है।

प्रार्थना विषय :

1. आइए हम राष्ट्र से संस्कृति-विनाशकारी डेटिंग एप्लिकेशन को हटाने के लिए प्रार्थना करें/

2. आइए हम उन लोगों के अहसास के लिए प्रार्थना करें, जिन्होंने डेटिंग एप्लिकेशन के कारण अपना पैसा और जीवन खो दिया है/

3. आइए हम तमिलनाडु में युवक और युवतियों के बीच डेटिंग एप्लिकेशन के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए सरकार के लिए प्रार्थना करें/

4. इन ऐप्स में फंसे बच्चों और बड़ों के लिए प्रार्थना करें कि वो इससे बाहर आएं.

बारिश के कारण प्रभाव।

पाकिस्तान ने हाल ही में अभूतपूर्व वर्षा का अनुभव किया। UNICEF ने घोषणा की कि बाढ़ से 30 लाख बच्चे प्रभावित हुए हैं और मानसून की बारिश के कारण 3 करोड़ प्रभावित हुए हैं। देश भर के 116 जिले प्रभावित हुए हैं। पाकिस्तान में बारिश के कारण आई बाढ़ से 1100 लोगों सहित लगभग 350 बच्चों की मौत हो गई है। 1600 से ज्यादा घायल हुए हैं। 2 लाख 87 हजार घर पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। 6 लाख 62 हजार घरों को आंशिक नुकसान पहुंचा है। उनके आसपास बाढ़ के कारण, लोग दस्त, श्वसन पथ के संक्रमण और चमड़ी रोग से प्रभावित हुए हैं।

प्रार्थना विषय :

1. आइए हम प्रार्थना करें कि बारिश से कोई प्रभावित न हो, खासकर बच्चे।

2. आइए हम प्रार्थना करें कि देश में बाढ़ के कारण आपदाएँ उत्पन्न न हों और राष्ट्र की रक्षा हो; प्रार्थना करें कि मौतों को रोका जाए ।

3. आइए हम प्रार्थना करें कि बारिश के कारण होने वाली संक्रामक बीमारियों से परमेश्वर सभी की रक्षा करें।

4.आइए हम आशीषित बारिश और भूमि में समृद्धि के लिए प्रार्थना करें।

वायु प्रदूषण।

दिल्ली में वायु प्रदूषण पिछले 2 साल से अपने चरम पर है। जिसकी वजह से दिल्ली के लोग तरह-तरह की बीमारियों की गिरफ्त में आ गए हैं। इस प्रदूषित हवा में सांस लेने के कारण 10 में से 8 बच्चे सांस की समस्या के साथ अस्पताल में दाखिल रहते हैं। यह वायु प्रदूषण के लिए जिम्मेदार दिल्ली और आसपास के राज्यों जैसे हरियाणा और पंजाब में कृषि अपशिष्ट का जलाया जाना के है। नवीनतम शोध आंकड़ों के अनुसार, भारत उच्च वायु प्रदूषण वाले देशों की सूची में दूसरे स्थान पर है। और भारत में दिल्ली नंबर वन है।

प्रार्थना विषय :

1. सांस की समस्या से जूझ रहे बच्चों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करें।

2. आइए हम प्रार्थना करें कि राज्य सरकार और केंद्र सरकार मिलकर वायु प्रदूषण को रोकने के लिए उचित प्रयास करें और इसे एक महत्वपूर्ण स्तर तक पूरी तरह से कम करें।

3. आइए हम प्रार्थना करें कि जलवायु परिवर्तन के कारण जंगल में लगने वाली आग के परिणामों के बारे में, उद्योगों में वृद्धि के बारे में, और वाहनों से निकलने वाली दूषित हवा के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा की जाए।

4. आइए हम उन 70 लाख लोगों की स्थिति के लिए प्रार्थना करें जो वायु प्रदूषण से संबंधित बीमारी के कारण हर साल अपने नियत समय से पहले मर जाते हैं।

RED ALERT
SAMSON

इस रेड अलर्ट लेख में हर महीने हम उन लोगों के बारे में सोच हैं जो एक बार परमेश्वर द्वारा चुने गए थे लेकिन उनकी अवज्ञा, गलती और धन की इच्छा के कारण दूर हो गए और इस तरह परमेश्वर द्वारा दंडित किये गए। इस बार, आइए हम शिमशोन को देखें, जिसे इस्राएल के लोगों को पलिश्तियों के हाथों से बचाने के लिए चुना गया था। शिमशोन के जन्म से पहले ही परमेश्वर ने भविष्यवाणी कर दी थी कि उसे कैसे पाला जाना चाहिए। वह बड़े साहसी था। उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा अपनी ताकत से दुश्मनों और जानवरों को आसानी से पराजित करने का वरदान दिया गया था। यद्यपि यह पुरूष बलवान और वीर था, परन्तु पलिश्तियों ने उसे पकड़ लिया, और उसकी आंखें फोड़ डालीं, और बन्दीगृह में उस से अन्न पीसवाया। आइए इसके पीछे की वजह को जाने।

उसके और परमेश्वर के बीच कोई संबंध नहीं!

शिमशोन को इस्राएल के उद्धार के लिए परमेश्वर द्वारा चुना गया था और वह लगभग 20 वर्षों तक इस्राएल का न्यायी रहा। यद्यपि न्यायियों की पुस्तक शिमशोन की सामर्थ्य और उसके साहस के बारे में लिखती है, इसमें परमेश्वर और उसके बीच के संबंध का उल्लेख नहीं है, जो परमेश्वर द्वारा चुने जाने की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। दो स्थानों पर लिखा है कि शिमशोन ने यहोवा को पुकारा (न्यायियों 15:14-15, 16:18)। ऐसा लगता है जैसे उसने प्रभु को पुकारा जब मृत्यु उसके निकट थी।

लेकिन परमेश्वर के द्वारा चुने गए अन्य लोग उसके साथ अपने संबंध के कारण अपने जीवन में सफलतापूर्वक भागे। परमेश्वर की सलाह के बिना परमेश्वर की योजना पूरी नहीं हो सकती।

जब तक हम परमेश्वर की इच्छा को नहीं समझेंगे और उसके अनुसार कार्य नहीं करेंगे तब तक हम अपने जीवन के मार्ग को पूरी तरह से पूरा नहीं कर सकते।

परमेश्वर के साथ आपका क्या रिश्ता है?

क्या हम केवल अपने स्वार्थ के लिए परमेश्वर को खोजते हैं या हम उनके दिल को समझते हैं और उनकी इच्छा पूरी करते हैं? इसके बारे में सोचें। शिमशोन के पतन का मुख्य कारण परमेश्वर के साथ संबंध का अभाव था।

संसार की अभिलाषा !

यद्यपि शिमशोन ने परमेश्वर की सामर्थ से बहुत से काम किए, परन्तु उसकी आंखें सांसारिक अभिलाषाओं पर लगी थीं। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के साथ नहीं है, तो वह पाप पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता है। इसलिए शिमशोन ने वही किया जो उसे भाता और ठीक लगता था। सबसे पहले, उसने तिम्नाह में एक महिला को देखा और उससे शादी करने की कोशिश की। उसने परमेश्वर के आदेश की अवहेलना की कि उसे अन्यजातियों की महिला से शादी नहीं

करनी चाहिए। चूंकि यह विफल हो गया, वह गाजा में एक वेश्या के पास गया (न्यायियों 16:1)। बाद में, उसे सोरेक की घाटी में एक महिला से प्यार हो गया जिसका नाम दलीला था (न्यायियों 16:4)। दुनिया के लिए उसका प्यार उसके लिए एक जाल बन गया। चूंकि उसकी नजर पाप पर पड़ी, इसलिए वह अपने दुश्मनों के जाल में फंस गया, जहां उसकी आंखें फोड़ दी गईं और उसे अनाज पीसने की स्थिति में धकेल दिया।

बाईबल कहती है, सांसारिक सुख हमेशा परमेश्वर के विरुद्ध होते हैं। इसलिए, आइए हम इन सांसारिक सुखों के बजाय प्रभु के राज्य की खोज करें।

वाचा का तोड़ना!

शिमशोन का जन्म और उसकी नासरी बुलाहट नए नियम में यीशु मसीह के जन्म और बुलाहट का पूर्वाभास थी। वह इस तरह के एक नेक बुलावे के महत्व को समझे बिना जी रहा था। सबसे बढ़कर, उसकी ताकत का रहस्य किसी को पता नहीं होना चाहिए, लेकिन दलीला ने उसे अपने शब्दों के साथ दिन-ब-दिन मजबूर किया, जब तक कि उसे मौत के जाल में फंसा न लिया गया और उसने अपनी ताकत का

पूरा रहस्य प्रकट कर दिया (न्यायियों 16:16,17)। उसने अपने और परमेश्वर के बीच की वाचा को तोड़ा। उसी क्षण से परमेश्वर की ढाल उसके ऊपर से हट गई। वह उसके शत्रु के हाथ में दे दिया गया। यह शिक्षा कि 'परमेश्वर हमारी रक्षा करेगा चाहे हम कितना भी पाप कर लें, केवल उसका अनुग्रह ही काफी है और हम कितने भी पाप कर सकते हैं' उच्च स्तर पर उठ रहा है। हमें पाप से दूर रखने के लिए परमेश्वर का अनुग्रह हमें दिया गया है। जब हम इसका गलत इस्तेमाल करते हैं तो इसका असर हम पर पड़ता है।

मेरे प्यारे नौजवानों जो इसे पढ़ रहे हैं! आप परमेश्वर द्वारा जागृति के लिए चुने गए हैं। इस जागृति में हम में से प्रत्येक का एक उद्देश्य है। हमें इससे दूर रखने के लिए शैतान हमारे और परमेश्वर के बीच दरार डालने की कोशिश करता है।

वह हमारे प्रार्थना का समय चुरा लेगा। फिर वह हमारी आँखों को संसार की ओर मोड़ देता है और हमें पाप में गिराता है और बुलाहट से दूर कर देता है। सो आओ हम अपनी नियुक्ति की दौड़ में चौकस रहें और धीरज धरें, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।

-समाप्त

Petra

पतरस के साथ एक पाला

हेरोदेस की कैद और पीटर की रिहाई! (प्रेरितों के काम 12)

PART-11

हेरोदेस यहूदियों पर शासन करने वाले एक शाही परिवार को दी गई उपाधि थी। उन्हें रोमियों द्वारा नियुक्त किया गया था। नियुक्त किए जाने वाले पहले परिवार को 'हेरोदेस द ग्रेट' कहा जाता था, और वह वह था जो उस क्षेत्र के सभी नर बच्चों का नरसंहार करके यीशु को एक शिशु के रूप में मारना चाहता था।

महान हेरोदेस के पोते और अन्तिपास के भाई के बेटे, जिसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को मार डाला, हेरोदेस अग्रिप्पा ने याकूब को मार डाला, जो यीशु के बारह शिष्यों में से एक था, एक बार जब उसने जान लिया कि हत्या ने यहूदी लोगों को खुश किया, तो उसने पतरस को भी मार डालने प्रयास किया । पस्का उत्सव के दौरान, उन्होंने पतरस को गिरफ्तार किया और उन्हें चौथे श्रेणी की सुरक्षा के हाथों में सौंप दिया, जिसका अर्थ है कि वह कुल 16 लोगों द्वारा निगरानी करेंगे, जिसमें चार पहरेदार शामिल हैं जो हर तीन घंटे में उनकी निगरानी करते हैं।

यद्यपि पतरस बन्दीगृह में था, जंजीरों में जकड़ा हुआ था, उसने कुछ भी गलत नहीं किया था। जब कोई जानता है कि अगले दिन उसका सिर काट दिया जाएगा, तो वह कैसे सो सकता है? लेकिन उस रात उसे गहरी नींद आई क्योंकि वह जानता था कि अगर उसका सिर काट दिया जाता है तो वह स्वर्ग में खुश होगा, या यदि वह बच जाता है तो वह परमेश्वर की सेवा करना जारी रखेगा। दूसरी तरफ, पतरस की स्थिति जानकर चर्च के सदस्य आतंकित हो गए। उन्हें नींद नहीं आ रही थी और वे लगातार उनके लिए प्रार्थना कर रहे थे। चर्च की समर्पित प्रार्थना ने स्वर्ग को हिला दिया और पतरस को रिहा करने के लिए परमेश्वर के स्वर्गदूत को जेल भेज दिया गया। पतरस के हाथों की जंजीरें अपने आप गिर गईं।

जब पतरस ने स्वर्गदूत का पीछा किया, तो न तो पहली और स्तरीय सुरक्षा और न ही लोहे के दरवाजे ने उसे रोका। इसके बजाय, वे अपने आप खुल गए।

पतरस समझ गया कि परमेश्वर ने उसे हेरोदेस के हाथों से और यहूदियों के विचारों से बचाने के लिए अपना दूत भेजा है। जब रूदे ने पतरस के आगमन को भांप लिया और लोगों को इसकी घोषणा की, तो उन्होंने शुरू में विश्वास करने से इनकार कर दिया। लेकिन फिर वे पतरस को देखकर दंग रह गए और परमेश्वर के नाम की महिमा हुई।

पतरस की लेखन सेवकाई!

नए नियम की दो पुस्तकें प्रेरित पतरस ने लिखी हैं। उन्होंने इसे अपने जीवन के अंतिम चरण के दौरान लिखा होगा और यह लिखने के बाद उन्हें कैद कर लिया गया होगा। सम्राट नीरो के दर्दनाक दिनों में घटित घटनाओं का उल्लेख किया गया है। 1 पतरस 5:13 में बाईबल कहती है कि ये सब बेबीलोन में लिखे

गए थे। पूरे रोमन साम्राज्य में, मसीहों का शिकार किया गया और उन्हें मार डाला गया। उनकी पहली पुस्तक का उद्देश्य उन विश्वासियों को उत्साहित करना था जिन्होंने इस अवधि के दौरान बहुत कुछ खोया था। परमेश्वर के सभी बच्चे इस दुनिया में अजनबी हैं, क्योंकि उनका घर स्वर्ग में है।

मसीह के वचन कभी नाश नहीं होंगे। बाहरी सुंदरता की तुलना में आध्यात्मिक सुंदरता को अधिक महत्व दिया जाता है। जब यीशु की मृत्यु हुई, तो उसने उन आत्माओं के बीच प्रचार किया जो नूह के समय में उनकी आज्ञा न मानने के कारण नाश हुई थीं।

पहली किताब में बाहरी चुनौतियों से निपटने के तरीके पर प्रकाश डाला गया है और दूसरी किताब में उन्होंने उन समस्याओं पर चर्चा की है जो चर्च के अंदर लोगों द्वारा उठाई जाती हैं।

वह दूसरी किताब में नकली भविष्यद्वक्ताओं और यीशु के दूसरे आगमन के बारे में भी चर्च को चेतावनी देता है। आदि में, संसार परमेश्वर के वचन द्वारा बनाया गया था। दुनिया तब भारी बाढ़ से नष्ट हो गई थी। अब दुनिया आग से भस्म हो जाएगी। एक दिन एक हजार साल के बराबर है और परमेश्वर के लिए इसके विपरीत है। यीशु सिर्फ यह सुनिश्चित करने के लिए आने में देरी कर रहा है कि हर कोई उद्धार में प्रवेश करे। इन सभी विवरणों का उल्लेख पतरस की पुस्तक में किया गया है। उसने इन किताबों को इतनी अच्छी तरह से लिखा है कि बहुत से लोग हैरान हैं कि गलील के एक मछुआरे के पास यूनानी भाषा का इतना बड़ा ज्ञान और प्रवीणता कैसे आई।

निष्कर्ष

शमौन पतरस यीशु द्वारा चुना जाने वाला पहला प्रेरित था। हालाँकि जब यीशु जीवित थे तो पतरस को चंचल स्वभाव के व्यक्ति के रूप में देखा जाता था, वह भीड़ में बोलने वाले पहले व्यक्ति भी था। वह अपने दिल की बात कहता था, भले ही ह सही या गलत हो और वह हमेशा चीजों को जानने के लिए उत्सुक रहता था। लेकिन एक बार जब यीशु ने पृथ्वी को छोड़ दिया, तो उन्होंने समय की आवश्यकता को समझा और यीशु की जगह लेने का प्रयास किया। उसने सेवकाई और प्रार्थना का पालन किया जो उसने यीशु से सीखा। मसीह ने अपने 12 शिष्यों को चुनने से पहले पूरी रात प्रार्थना की। लेकिन जब यहूदा ने अपना स्थान खो दिया, तो पतरस ने हस्तक्षेप किया और चिट के माध्यम से मसीह से परामर्श प्राप्त करने के बाद मत्तियाह को 12वें व्यक्ति के रूप में चुना। यीशु के समय के बाद, पतरस उपदेश देने वाला पहला प्रेरित था, पहला चमत्कार करने वाला और चर्च स्थापित करने वाला पहला व्यक्ति था। उसने मसीह का अभिषेक प्राप्त किया और प्रतिदिन चर्च में शामिल होने वाले सैकड़ों लोगों के छुटकारे का कारण बना। वह पहला जागृति लाने वाला नेता भी था। इसलिए पिछले 11 महीनों में, हमने पतरस के साथ यात्रा की जो मसीह द्वारा चुना और प्रशिक्षित किया गया था, उसके लिए एक तारे की तरह चमका और अंत में मसीह के लिए एक रक्त गवाह के रूप में अपना जीवन बलिदान कर दिया। आज भी यीशु का हृदय पतरस जैसे चमकने वाले सितारों के लिए तरसता है। क्या आप आगे बढ़ेंगे?

आइए हम प्रार्थना करें और जीतें!

दानिय्येल कितना बुद्धिमान, ज्ञानी और कुशल व्यक्ति था! उसने दर्शन और सपने देखे और सपनों की व्याख्या भी कर सकता था। भले ही वह एक अभिषिक्त धर्मी व्यक्ति था। दानिय्येल को मुख्य रूप से उसके नियमित प्रार्थना जीवन की विशेषता से जाना जाता था। हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि जिन प्रमुख मसीही अगुवों को हम अभी देखते हैं, आज हमारे समुदाय में उनकी प्रार्थनाओं से ही वे स्थापित हैं।

सुबह-सुबह प्रार्थना करने वाले अगुवे।

1. रॉबर्ट मुरे एम' चेयेन के सुबह के शुरुआती घंटे पूरी तरह से प्रार्थना और वचनों पर ध्यान के लिए समर्पित थे। सुबह-सुबह परमेश्वर के साथ समय बिताने से पहले वह कभी किसी से नहीं मिलते। जिन चर्चों में उन्होंने प्रचार किया, उनमें पुनरुत्थान हुआ और उनके मुंह से निकलने वाला हर शब्द परमेश्वर के शब्दों के रूप में निकला। जितनों ने उसका उपदेश सुना, वे सब प्रभु की आत्मा से छू गए।

2. डेविड ब्रेनरड ने कहा है कि सुबह-सुबह परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताना उनका आनंद था। वह प्रतिदिन प्रात:काल 2 घंटे प्रभु के साथ गुप्त रूप से व्यतीत करता था। डेविड ब्रेनरड ने उन रेड इंडियन्स के बीच सेवा की जो पाप, अधर्म में जी रहे थे और जिन्होंने सुसमाचार के संदेश का विरोध किया था। बाद में, रेड इंडियन्स को उनके पापों का एहसास हुआ, पाप कबूल किया, पश्चाताप किया और मसीह को स्वीकार किया।

3. विश्वास के श्रद्धेय योद्धा जॉर्ज मुलर ने परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ समय दिया। वह हर सुबह 6 बजे से 8 बजे तक प्रार्थना करने के लिए समर्पित थे। अपने पूरे प्रार्थना जीवन में, उसे 50,000 प्रार्थनाओं का उत्तर मिला। उन 50,000 प्रार्थनाओं में से 30,000 प्रार्थनाओं का उत्तर 24 घंटे के भीतर प्रभु ने दिया। उनके घुटनों से उठने से पहले ही उनकी कई प्रार्थनाओं का उत्तर परमेश्वर ने दे दिया। विश्वास का एक योद्धा जिसने घोषणा की कि केवल प्रार्थना और विश्वास के माध्यम से और परमेश्वर पर पूर्ण निर्भरता से ही हम प्रभु के लिए कुछ भी हासिल कर सकते हैं।

हम आशा करते हैं कि आपने उपरोक्त अगुवों से सीखा है कि सुबह की प्रार्थना एक व्यक्ति को एक अगुवा और दूसरों के लिए उपयोगी पात्र बनाती है।

रातभर प्रार्थना करने वाले अगुवे

• आधी रात को, पौलुस और सीलास ने परमेश्वर की स्तुति गाई (प्रेरितों के काम 16:25)। उन्होंने अपने उत्पीड़न के बावजूद जेल में प्रार्थना की और जेल के दरवाजे खोल दिए गए। दारोगा और उसके घराने के लोगों ने बपतिस्मा लिया।

• याकूब ने अपने परिवार को नदी के पार दूसरी ओर भेज दिया और अकेला रह गया और भोर तक परमेश्वर से मल्लयुद्ध करता रहा और आशीष प्राप्त किया । (उत्पत्ति 32: 22 -29)।

• ईवान रॉबर्ट्स को प्रतिदिन आधी रात को 4 घंटे प्रार्थना करने की आदत थी। उसकी प्रार्थना से वेल्स राष्ट्र में जागृति आई।

• अपनी सेवकाई के बाद थके होने के बावजूद, साधु सुंदर सिंह बिना असफल हुए सोने से पहले प्रार्थना करते थे। वह जोखिम भरे स्थानों में गए और उन्होंने मसीह का प्रचार किया और बहुतों को मसीह के पास ले आए।

मसीह के जन्म की श्रेष्ठता।

तारा।

यीशु मसीह के जन्म की रात पूर्वी आकाश में एक तारा दिखाई दिया। न केवल यह तारा आकाश में एक संकेत के रूप में दिखाई दिया और घोषणा की कि "जिस मसीहा को आप ढूंढ रहे हैं, वह भोर का तारा, यहाँ पैदा हुआ है," लेकिन पूर्व में दिखाई देने वाला तारा ज्योतिषों को वहाँ ले गया जहाँ यीशु था(मत्ती 2:2,9)। हमें भी वह सितारा बनना चाहिए।

स्वर्गदूत

प्रभु के स्वर्गदूत ने अपने झुण्ड की रखवाली करनेवाले चरवाहों को यीशु के जन्म का सुसमाचार सुनाया। जिन चरवाहों ने बड़े आनन्द का सुसमाचार सुना, वे यीशु को देखकर आनन्दित हुए (लूका 2:9,10)। हम कब वह स्वर्गदूत बनने जा रहे हैं?

ज्योतिषों के उपहार।

जो ज्योतिषी यीशु को देखने गए, वे सोना, लोबान, और गन्धरस की भेंट लाए। वे राजाओं के राजा के रूप में उसका सम्मान करने के लिए सोना लाए, लोबान, क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु है, और गन्धरस, क्योंकि यीशु मसीह को मरना था (मत्ती 25:40)। क्या हम आज उपहार देने वाले हैं?

गौशाला

ब्रह्मांड के निर्माता का जन्म बैतलहम नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था, एक बदबूदार गौशाला में जहाँ गायों को रखा जाता था, क्योंकि सराय में कोई जगह नहीं थी। एक गौशाला दीनता को दिखाती है, वह न केवल जन्म से, परन्तु मरते दम तक भी दीन रहा (लूका 2:7)। क्या हम भी दीनता धारण कर सकते हैं?

Source: internet